श्रीनारायाण को अर्पित
यशोधर्मन
कृत

आज यह हो रहा है, तो कल क्या होगा ?

[64]
उठो अर्जुन! जागो मेरे हिंदू राष्ट्र

यदि आज का छोटा-सा आधुनिक समाज, आपके इतने बड़े हिंदूसमाज के माता-स्वरूप दुर्गा को इस प्रकार से चित्रित करने का दुःसाहस कर सकता है, तो कल जब इस समाज की यही मनोवृत्ति और भी सुदृढ़ होगी तब वह आपकी अपनी माता, आपकी अपनी बहन, आपकी अपनी पत्नी एवं आपकी अपनी पुत्री को किस रूप में चित्रित करेगा? आज आपकी शक्ति जब कुछ बाकी है तब यदि आप इसका निवारण नहीं कर पाते, तो आने वाले समय के साथ जब आपकी शक्ति क्षीण होती जायेगी एवं आपका रहा-सहा मनोबल टूटता जायेगा, तब आप क्या कर पायेंगे? बेशक आज आप इस समस्या को टालते जायें, पर क्या समय आपके लिए ठहरेगा?

संदर्भ सूची

~ दैनिक जागरण, नई दिल्ली

~ चैनल 7, नई दिल्ली

~ इण्डिया गैप्स टुडे, नई दिल्ली

~ संस्कृति सरगम

~ हिंदू जनजाग्रुति समिति, मुंबई

~ http://www.hindujagruti.org 19-11-2006, 4-3-2007

ॐ नमो नारायणाय!

मैं किसी राजनीतिक दल, सामाजिक संगठन, या धार्मिक पंथ का सदस्य नही हूँ।

कुछ सच्चाइयाँ मुझे हिंदू माँ-बहन-बेटी, पिता-भाई-बेटों तक पहुँचानी है। इनमें से कुछ जानकारियाँ उनके वर्तमान/भविष्य के लिए सहायक सिद्ध हो सकती हैं।

मेरी चेष्टा यह होगी कि मैं आपको वह दृष्टि भेंट कर सकूँ जिसके सहारे आपकी नज़र धुंध को भेद कर उसके परे देख सके।

विश्वविद्यालय की डिग्री एवं भारतवर्ष तथा विदेश से तीन प्रोफ़ेशनल योग्यताओं के आधार पर, मुझे कई देशों के निगमित क्षेत्र में उच्च स्तर पर, व्यापक प्रशासनिक कार्यभार सँभालने का अवसर मिला। इस बीच, 20 विभिन्न देशों के व्यक्तियों के साथ निकट संपर्क में कार्य करने का, एवं उन्हें जानने का भी, समुचित अवसर मिला। पचीस वर्षों तक अथक परिश्रम के पश्चात, अब मैंने उस कार्य से निवृत्त होकर एकांत वास का आश्रय लिया है।

श्री नारायण की दया से मेरे जीवन की "व्यक्तिगत" महत्वाकांक्षाएँ तृप्त हो चुकी हैं। अब मैं, अपने समय एवं परिश्रम के बदले में, कुछ भी नहीं चाहता।

मैं अपनी सोच किसी पर थोपना नहीं चाहता। आपको पसंद हो, स्वीकार करें। नापसंद हो, रद्दी की टोकरी के हवाले करें।

आपकी संतानें आगे चलकर यही सब सीखेंगी - क्या यह मंजूर है आपको?

एम-ए (इतिहास) की पाठ्य-पुस्तकें - सरकारी संरक्षण में

"दुर्गा एक ऐसी महिला हैं, जिन्हें शराब बेहद पसन्द है। महिषासुर के साथ संघर्ष के दौरान उन्होंने शराब पी रखी थी। दुर्गा के पुरुष शत्रु उन पर आसक्त रहते थे। वे उनसे युद्ध नहीं, बल्कि विवाह करना चाहते थे। देवी दुर्गा के परिवार ने शर्त रखी थी कि जो कोई दुर्गा को युद्ध में हरा देगा, उसका विवाह दुर्गा से करा दिया जायेगा। दुर्गा ने साफ कर दिया था कि वह अपने प्रेमियों के साथ कैसे युद्ध करेंगी। देवी दुर्गा के शत्रु इसे प्यार क इजहार मानते थे।" यह सारी ऊलजलूल बातें इंदिरा गांधी नैशनल ओपन यूनिवर्सिटी के उन छात्रों को पढ़ाई जा रही है, जो इतिहास में एम-ए कर रहे हैं। 'धार्मिक परम्परायें और भक्ति दर्शन' नाम की इस पुस्तक में दुर्गा के अलावा अन्य हिन्दू देवी-देवताओं का भी जमकर अपमान किया है। इस किताब के पेज नंबर 29 में भगवान शंकर के बारे में लिखा है कि - "वह एक नग्न रहने वाले साधु थे, जो तपस्वियों एवं देवताओं की पत्नियों का शीलभंग करते थे। शिव का चरित्र विरोधाभासों से पटा था। वह तपस्वी भी थे और कामुक भी।" इसी तरह पेज 27 पर कृष्ण के बारे में लिखा है - "महाभारत युद्ध में उनकी सलाह चालाकी भरी ही नहीं बल्कि धूर्तता पूर्ण भी होती थी।" इग्नू (इंदिरा गांधी नैशनल ओपन यूनिवर्सिटी) के पाठ्यक्रम के लिए एक भारी भरकम विशेषज्ञ समिति बनाई गई है। उसी की अनुमती से किताबें लिखवायी जाती हैं, लेकिन किसी ने भी इन बातों के लिए आपत्ति नहीं दर्ज कराई।

लेख शिशिर श्रीवास्तव, चैनल 7, नई दिल्ली, प्रकाशित दैनिक जागरण, नई दिल्ली संस्करण, 19-7-06, प्रेषक श्री मुरारि पचलंगिया, गुरुग्राम (हरियाणा) संदेश "अपने देश में भी दुष्प्रचार सरकारी संरक्षण में खूब हो रहा है।"

क्या सीखेंगी तुम्हारी आने वाली पीढ़ियाँ? यदि हमारी शिक्षण संस्थायें अपने छात्र-छात्राओं को यह सब पढ़ायेंगे तो वे स्नातक बनकर आने वाली पीढ़ी को क्या सिखायेंगे? • उन नराधमों का उद्देश्य क्या है? अवज्ञा रूपी विष का बीजारोपण कर, हिन्दुओं की वर्तमान एवं भावी पीढ़ियों को धीरेधीरे, सुनियोजित ढंग से, पहले अ-हिन्दू और फिर हिन्दू-विरोधी बनाना। क्या यह एक षड़यन्त्र है हिन्दू समाज के विरुद्ध? सोच कर देखिए। • किसकी सरकार, कैसी सरकार? क्या यह तुम हिंदुओं की सरकार है जो तुम्हारी संतानों को ऐसी शिक्षा देती है? अपने पूर्वजों की कही हुई एक बात को मत भूलो - जैसी राजा, वैसी प्रजा। यदि ऐसे राजा को चुनोगे तो उसकी अधीनता में काम करने वाले शिक्षक भी वैसे ही होंगे।

जैसी संगत में रहोगे, वैसे ही बनोगे

जामा मस्जिद में बिकते हैं हिंदू देवी-देवताओं के नंगे चित्र

"नई दिल्ली। हिंदू देवी-देवताओं के नग्न चित्र बनाने के मामले में कुख्यात मकबूल फिदा हुसैन एकमात्र ऐसे मुस्लिम नहीं हैं जो हिन्दू देवी-देवताओं को अपमानित करते हैं, वरन दिल्ली के सबसे बड़े इस्लामी केन्द्र जामा मस्जिद में भी खुलेआम हिन्दू देवी-देवताओं के नग्न चित्र बेचे जा रहे हैं। "संस्कृति सरगम" को प्राप्त एक सी-डी के द्वारा यह रहस्योद्घाटन हुआ। किसी अज्ञात व्यक्ति ने सी-डी समाचार पत्र के कार्यालय को भेजी।

इस सीडी में दिखाया गया है कि किस प्रकार जामा मस्जिद में घुसने के बाद आपको रंगीन या सादे ऐसे रेखा चित्र मिल सकते हैं जिनमें राम, कृष्ण, सीता, हनुमान, शंकर और देवी दुर्गा के अश्लील और नग्न स्वरूप होते हैं। सी-डी में दिखाया गया है कि चेहरा ढके सबीना नाम की एक महिला से एक व्यक्ति ऐसे चित्रों के बारे में जानकरी प्राप्त करता है तो सबीना स्वीकार करती है कि ऐसे चित्र खुलेआम जामा मस्जिद, छोटी मस्जिद में बिकते हैं और सादे चित्रों की कीमत 200 रुपये तथा रंगीन चित्रों की कीमत 500 रुपये तक है। प्रश्नकर्ता द्वारा यह पूछने पर कि इन चित्रों की बिक्री का उद्देश्य क्या है तो सबीना ने कहा कि शौकियन ये चित्र बेचे जाते हैं और लोग खरीदते हैं। सीडी में सबीना प्रश्नकर्ता को माता सीता और हनुमान जी का ऐसा ही अश्लील चित्र दिखाती है। इसी प्रकार अजमेरी गेट स्थित एंग्लो अरबिक उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के पास श्यामपट पर देवी दुर्गा का ऐसा ही नग्न चित्र भगवा द्वज के साथ सार्वजनिक रूप से चित्रित किया हुआ चिपकाया गया है।" साभार - संस्कृति सरगम

प्रकाशित इण्डिया गैप्स टुडे, DL(N)07/0077/06-08, हिन्दी पाक्षिक, वर्ष 19, अंक प्रथम, 1-15 जनवरी 2007, 25/50 शक्ति नगर, दिल्ली 110 007, प्रेषक -श्री दयराम पोद्दार, राँची 834001, मो 92347-50607

सैकड़ों वर्षों की इनकी संगत ने तुम्हें आज क्या से क्या बना दिया है। तुममें से कुछ हैं जो आम हिंदू को दोषी ठहराकर अपने मन की भड़ास निकाल लेते हैं। इनके इस निकम्मेपन ने आज हमें कहीं का न छोड़ा। • ये लोग जो तुम्हारे देवी-देवताओं के नंगे चित्र बेचते हैं अपने धर्मगुरुओं के संरक्षण में, ये सब कौन हैं? ये सब हैं हिंदू-द्रोही। हिंदुओं के इस राष्ट्र में रहते हैं, और उन्हीं से द्रोह करते हैं। ये हैं राष्ट्र-द्रोही हिंदुओं के इस राष्ट्र के प्रति। • क्या होगा तब, जब यह हिंदुओं का राष्ट्र, दार-अल-इस्लाम बन जायेगा? अब भी समय है सोच कर देखिए, क्या होगा जब यह राष्ट्र एक मुस्लिम-राष्ट्र बन जायेगा? जो आज इग्नू में हो रहा है, जामा मस्जिद में हो रहा है, वह सब आपके आस-पास होगा, आपके दहलीज के सामने ही होगा। क्या करेंगे तब? शर्म से सर झुका लेंगे? अभी तो आप इन चीजों को अपनी आँखों से देखने के लिए बाध्य नहीं हैं। इसलिए आप उन्हें नजर-अंदाज कर, अपनी ही धुन में जुटे हैं। कल जब यह सब आपके आँखों के सामने होगा, या फिर आपके ही अपने परिवार के साथ होगा, तब आप क्या करेंगे? कभी यह सोच कर देखना जरूरी समझा क्या आपने? • नपुंसक कौन होता है? वह जो अपने सम्मान की रक्षा स्वयं नहीं कर सकता। जो अपने पूजनीयों का मान नहीं रख सकता। जिसे नपुंसक मानते हुए विधर्मी चाहे जो करते जाते हैं, पर वह नपुंसक तो नपुंसक बना मन ही मारे बैठा रहता है। वह कतई हिंदू नहीं हो सकता है, क्योंकि हिंदू के पूर्वज ऐसे कायर नहीं हुआ करते थे। अतः आज आप स्वयं निर्णय कर लीजिए कि "आप" क्या हैं?

जिन्हें आपके बच्चे अपना आदर्श मानते हुए शिक्षा पायेंगे

कुछ समय पहले की ही बात है। महाराष्ट्र के गवर्नर एम एफ़ हुसैन का सम्मान करने वाले थे उन्हें एक महान कलाकर बताते हुए (इसके विरोध में ईमेल अभियान चलाये गये)। उन्हीं दिनों कि बात है जब महाराष्ट्र सरकार स्कूल के बच्चों को अपने पाठ्यपुस्तकों के द्वारा यह शिक्षा देने जा रही थी कि एम एफ हुसैन एक महान कलाकार हैं (संदर्भ - सनातन प्रभात)। इस प्रकार उस व्यक्ति को न सिर्फ

महान ही घोषित किया जा रहा था बल्कि उसे पाठ्य पुस्तकों के माध्यम से आधुनिक भारत के एक ऐतिहासिक व्यक्तित्व की मान्यता दी जाने की चेष्टा की जा रही थी। • अब जरा सोच कर देखिए। आपके नन्हें-नन्हें बच्चे - जिनका दिमाग कोरे कागज की तरह होता है - जब उनके मनो-मस्तिष्क पर यह छाप छोड़ दी जाती कि यह व्यक्ति एक आदर्श पुरुष हुआ करता था, तो क्या आपके वही बच्चे बड़े होकर उसी आदर्श पुरुष के नक्शे-कदमों पर चलने की चेष्टा नहीं करते? और जब उन्हें कोई यह बताने की चेष्टा करता कि वह आदर्श पुरुष नहीं बल्कि एक नराधम था, तो क्या ये बच्चे उस सत्य पर विश्वास करते? • एक बात और सोच कर देखिए। आपके वे बच्चे जो आज एक बड़े असत्य की उँगली थामें अपने पैरों पर खड़े होना सीखते, क्या वे बड़े होकर उसी असत्य को एक सत्य का दर्जा देते रहने की हर कोशिश नहीं करते? • अब प्रश्न उठता है कि एम एफ हुसैन का एक महान कलाकार होना सत्य है या फिर उसका एक आसुरिक चरित्र का नराधम होना सत्य है?

आप में से अनेकों को विश्वास ही नहीं होता

यदि मैं आपसे कहता कि हिंदू मान्यताओं को एक घिनौने रूप में विश्व के सामने प्रस्तुत करने के पारितोषिक स्वरूप उसे एक महान कलाकार का दर्जा मिला तो आप मन ही मन सोचेंगे कि इस आदमी का दिमाग फिर गया है। यदि मैं आपसे यह कहता कि उसने हमारी दुर्गा माता को नंगा कर अपने वाहन बाघ के साथ सम्भोग करते दिखाया तो आप सोचेंगे, या फिर स्पष्ट रूप से कहेंगे, कि मैं बहुत बढ़ा-चढ़ा कर बोल रहा हूँ। इसका परिणाम यह होता कि मेरी बातों का थोड़ा बहुत जो असर आप पर होता वह भी जाता रहता। यदि मै आपसे कहता कि इन्हीं तस्वीरों को बेच कर उसने लाखों/करोड़ों कमाये तो आप सोचते कि यह आदमी निश्चित ही पागल हो गया - भला कौन समझ ादार व्यक्ति ऐसी तस्वीरों को इतने दाम देकर खरीदेगा, यदि यह भी मान लिया जाये कि ऐसी तस्वीरें सचमुच बनायी गईं। • हमारी शक्तिशाली मीडिया ने (बड़े समाचारपत्र एवं बड़े टीवी चैनल) बड़ी बखूबी से इस सच्चाई पर पर्दा डाल रखा। और आपमें मीडिया की इमानदारी के प्रति एक ऐसा अंधविष्वास है कि आप उस विषय को मानने से भी कतराते हैं जिसे मीडिया में प्राधान्य नहीं मिला। आपको यह बात कभी समझ में नहीं आती कि आप जिस समाचारपत्र को दो-तीन रुपये में प्रतिदिन खरीदते हैं, उसी मीडिया की असली ताकत को पहचानने वाले उसे करोड़ों देकर खरीदते हैं। ये मीडिया वाले आपके मुहताज नहीं हैं, फिर भी वे आप तक पहुँचने की हर कोशिश करते हैं क्योंकि उनकी यही पहुँच उन्हें एक दूसरे से अधिक शक्तिशाली बनाती है। जितने शक्तिशाली वे अपने-आपको सबित कर पाते हैं उतनी ही गहरी उनकी जेब होती है, उतना ही बड़ा उनका पेट होता है और उतनी ही तीव्र उनकी भूख होती है। आप सोचते हैं कि आप जनता-जनार्दन हैं और आपके ही अखाड़े में वे अपको ऐसा पैंतरा दिखाते हैं कि आप पलटी तो खा जाते हैं पर यह नहीं जान पाते कि कब, क्या और कैसे हुआ? • कदाचित हम इस धोखे मे ही रह जाते कि उसने केवल भारतमाता को ही निर्वस्त्र दिखाया है और हुसैन का सबसे संगीन जुर्म आपके सामने ही न आता यदि रूसी मोदी ने उन तैलचित्रों की संकलित एक पुस्तक न छपवा दी होती। मैं नहीं जानता कि उस पुस्तक को छपवाने में रूसी मोदी का उद्देश्य क्या था पर इतना सत्य अवश्य है कि ऐसा कर उसने हमें सच्चाई और करीब ला दिय। जब मैंने पहली बार यह सुना थ कि टाटा जैसे सम्मनित ग्रुप के सुविख्यात रूसी मोदी ने कोई ऐसी पुस्तक छपवायी है तो मुझे सहसा विश्वास नहीं हुआ क्योंकि अनेक वर्ष पहले मैंने पारसियों के साथ तीन वर्षों तक प्रत्येक दिन के आठ-दस घंटे बिताये थे और उन्हें कभी

भी हिंदू विरोधी नहीं पाया था। यदि मैं इस बात की और खोजबीन करने का समय पाऊँ तो अवश्य यह जानने की चेष्टा करूँगा कि रूसी मोदी ने वह पुस्तक क्यों छपवायी पर आज मैं उसका ऋणी हूँ क्योंकि वह माध्यम बना मुझे इस सच्चाई तक पहुँचाने का। • यह उचित भी है कि आप किसी आश्चर्यजनक बात पर सहसा विश्वास न कर लें जब तक आपके पास उसे विश्वास करने की अच्छी वजह न हो। यही कारण है कि मैंने स्वयं इस विषय को अब तक छुआ नहीं था, अंग्रेजी एवं हिंदी में इतनी सारी पुस्तकें लिखने के बाद भी। मुझे वे सबूत चाहिए थे जो मैं आपको दिखा सकता। ईश्वर ने मेरी सहायता की, मुझे हिंदू जनजाग्रुति समिति के वेबसाइट तक पहुँचा कर, जहाँ से मैं इन सबूतों को आपके लिए इकट्ठा कर सका। पर अब जब आपके सामने इन सबूतों को रख रहा हूँ तो यह भी देखना चाहता हूँ कि आपमें कुछ पौरुष बचा भी है कि नहीं? आप माता कहते हैं उन्हें। यदि आपकी अपनी माता को नग्न कर सरेआम बाजार में बेचा जाता तो आपकी क्या प्रतिक्रिया होती? इस प्रश्न का उत्तर मैं आपसे नहीं माँगूंगा। आपके लिए छोड़ता हूँ कि आप सवयं अपने आपसे इस प्रश्न का उत्तर माँगें।

जब आप अपनी ही आँखो से देखेंगे, और उसे बारीकी से समझने की कोशिश करेंगे, तब क्या आप इस स्थिति की गम्भीरता को अपने अंदर महसूस कर पायेंगे?

धर्मनिरपेक्षता के ऐसे अनेक ठेकेदार आपको मिलेंगे जो हुसैन की तरफदारी में यह बहाना प्रस्तुत करने में सबसे आगे पाये जायेंगे कि एक बाघ और एक औरत की छवि बनाने से वह माँ दुर्गा की छवि नहीं हो जाती। हुसैन ने अपने हाथों से उस तैलचित्र पर उसका शीर्षक "दुर्गा" लिख कर किसी के लिए इस बहाने का मौका नहीं छोड़ा। • जब मैंने पहली बार उस छोटेसे चित्र को स्वयं हिंदू जनजाग्रुति समिति के वेबसाइट पर "माँ दुर्गा व्याघ्र के साथ सम्भोगरत" शीर्षक के साथ देखा तो पहली नजर में मुझे यह स्पष्ट नहीं हो पाया कि उन्होंने ऐसा शीर्षक इस चित्र के लिए क्यों चुना? • उस छोटेसे चित्र में मुझे एक व्याघ्र दिखाई दिया, एक नग्न स्त्री दीखाई दी, और चित्र का शीर्षक "दुर्गा" दीखायी दिया पर "सम्भोगरत" स्थिति स्पष्ट न हुई। अब मेरी समस्या यह थी कि मैं आपके समक्ष ऐसा कोई तथ्य नहीं रख सकता जिसे मैं उसे स्वयं न समझ लूँ। इस कारण, कम्प्यूटर का सहारा लेकर, उस चित्र को बड़ा करना पड़ा, अन्यथा आधुनिक कला की सांकेतिक अभिव्यक्ति को समझना सहज न था (वास्तविक तैलचित्र बहुत बड़ा होता है हॉल की दीवार पर टांगने के लिए)। • जब तक उसे मैंने समझा नहीं था तब तक मेरे अंदर वह ज्वाला नहीं भड़की जो उसके मर्म को पूरी तरह समझने के बाद। तब जाना कि उस नराधम ने कितना घिनौना खिलवाड़ किया है हम हिंदुओं की माता दुर्गा की छवि के साथ।

हुसैन की इस आधुनिक कलाकृति का विश्लेषण कर आपको इसका मर्म समझाता हूँ। जिस बारीकी एवं घिनौनी भावनाओं के साथ नराधम हुसैन ने इसे चित्रित किया है, शब्दों में उसकी व्याख्या उचित नहीं। अतः प्रश्नों को माध्यम बनाउँगा। कुछ प्रश्न आपके सामने रखूँगा और आप अपने-आपसे पूछेंगे कि चित्र आपसे क्या कहता है? ये प्रश्न केवल इशारा करेंगे। जबतक आप स्वयं इन प्रश्नों का उत्तर नहीं ढूँढेंगे तबतक बात आपके दिमाग से उतर कर आपके दिल तक नहीं पहुँचेगी। आपके दिल को छूने के बाद भी यदि वहाँ कोई ज्वाला न भड़की तो जान लीजिए आप मानसिक रूप से पूरी तरह नपुंसक बन चुके हैं और अपने-आपको हिंदू कहलाने का वास्तविक अधिकार खो चुके हैं।

बड़े चित्र को ध्यान से देखें और फिर इन संकेतों को पढें। एम एफ़ हुसैन की परिकल्पना में एक नग्न स्त्री सम्भोगरत है एक नर व्याघ्र के साथ। स्त्री के नग्न नितम्बों की स्थिति क्या दर्शायी है इस तथाकथित कलाकार ने? स्त्री के उघड़े स्तनों की गतिविधि को किस प्रकार से दर्शाया है उस नराधम ने? स्त्री के शरीर के ऊपरी हिस्से की गतिविधि को कैसे दर्शाया है इस व्यक्ति ने? तीरों की दिशा क्या संकेत करती है? तीरों के बीच स्त्री के सर के खड़े-बाल सम्भोग के दौरान किस अवस्था की ओर संकेत करते हैं? तीरों की दिशा से दर्शाया गया, स्त्री का उठा हुआ सर, फटी-आँखें ऊपर की ओर, सम्भोग में रत व्यक्ति के अनुभव की किस स्थिति की ओर इशारा करते हैं? स्त्री ने अपने हाथ में क्या पकड़ कर रखा है और तीरों की दो दिशायें क्या बताती है? बाघ के सर की गति-विधि और फटी-फटी आँखे सम्भोग के दौरान उसकी किस अभिव्यक्ति का द्योतक है? सम्भोगरत दो प्राणियों की अनुभूतियाँ, क्रिया के आरम्भ से लेकर चरमोत्कर्ष की स्थिति तक की यात्रा को, एक कलकार कैसे दर्शाता है?

इसे देखने और समझने के बाद मेरे मन में कुछ प्रश्न उभरे। • माना कि हुसैन की दृष्टि में यह एक कलाकृति है। तो क्या वह अपनी जन्मदायिनी माँ की नंगी तस्वीर बनाकर उसे एक कुत्ते के साथ सम्भोग करते हुए दिखाना चाहेगा? • द टाइम्स ऑफ इंडिया में एवं/अथवा द हिन्दुस्तान टाइम्स में कुछ लेख छपे थे जिनमें हुसैन का समर्थन किया गया था एवं आपत्ति जताने वाले हिंदुओं को उग्रवादी कहकर उनकी भर्त्सना की गई थी। उनके अनुसार ऐसी आपत्ति अनुचित है क्योंकि यह कलाकार की अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता में हस्तक्षेप है। मेरे मन में एक प्रश्न उठता है - क्या उन लेखों के लेखक एवं प्रकाशक अपनी-अपनी जन्मदायिनी माताओं को हुसैन के सुपुर्द करना चाहेंगे इस आशय से कि हुसैन उनकी भी नग्न कलाकृतियाँ उन सभी की अपनी-अपनी पसंद के जानवरों के साथ संभोगरत अवस्था में चित्रित कर सके? • अन्यत्र भी पढ़ा एवं सुना था कि हमारे अति आधुनिक मार्क्सिस्ट बुद्धिजीवीगण (जिनमें कई स्वनामधन्य महिलायें भी हैं) हमारे इस प्रजातंत्र की दुहाई देते हुए हुसैन जैसे एक महान कलाकर की स्वतंत्र अभिव्यक्ति के अधिकार का अनुमोदन करते हैं। अब जो प्रश्न मेरे मन में उठता है वह यह है कि ऐसी आधुनिक महिलायें अपनी ही नंगी तस्वीरें अपनी ही पसंद के किसी भी जानवर के साथ सम्भोगरत अवस्था में चित्रित क्यों नहीं करवाती? हुसैन तो हिंदू देवियों की ऐसी तस्वीरें बनाता है एवं उन्हे नीलाम कर देता है। अब ये सभी उन्नत विचारों वाले बुद्धिजीवी एवं पत्रकारगण यदि अपने उन चित्रों को हुसैन से बनवाकर नीलाम करवा देंगे तो उन्हें बहुत धन भी मिलेगा। ये छोटे-मोटे लेख लिखकर तो वे अपने लिए केवल एक शराब की बोतल ही खरीद पायेंगे। अगर उन्हें अपनी योग्यताओं को बेच कर पेट भरना ही है तो फिर इन चंद सिक्कों के पीछे क्यों भागते हैं? हुसैन का सहारा लें और ढेरों कमायें। • अब समस्या यह है कि मेरे पाठकों में

से कुछ नमूने ऐसे भी होंगे जो इस बात की रट लगायेंगे कि यदि वे इतने नीचे गिरे तो उनकी ही जबान में बोलते हुए मैं भला क्यों अपने-आपको इतना गिराता हूँ। इस प्रकार के व्यक्ति अपने-आपको बड़ी ऊँचाई पर बैठा हुआ पाते हैं। वे सभी अपने-आपको एक छोटा-मोटा गाँधी समझते है और उन्होंने कसम खा रखी है कि न तो वे बुरा सुनेंगे, न ही बुरा देखेंगे और न कभी बुरा कहेंगे। ऐसे व्यक्ति बड़े स्व-केन्द्रित होते हैं। अपने-आपको ऊँचा उठाने की चेष्टा में सदा लगे रहते हैं। कैसे अपने-आपको दूसरों की नजरों में महान से महानतर बनायें उसी बातपर उनकी नजर टिकी होती है। वे एक ऐसी काल्पनिक दुनिया में जीते हैं जहाँ वे यह मानकर चलते हैं कि अगर प्रत्येक व्यक्ति अपने-आपको बुराइयों से ऊपर उठाये तो यह संसार बुराई-रहित हो जायेगा। उनकी मूढ़ता इस हद तक बढ़ चुकी होती है कि वे इस छोटे से शब्द "अगर" की महत्ता को नहीं समझ पाते। यह छोटा-सा चींटी जैसा "अगर" उनके उस प्रकांड हाथी-सूँड़ में घुस कर उनके अस्तित्व को ही समाप्त कर देता है। ये सभी मूर्ख अपनी मूढ़ता भरी बातों के जरिए अनेक भोले-भाले लोगों को प्रभावित कर अपनी जमात में शामिल कर लेते हैं क्योंकि उनकी ये बातें मेरी बातों की तरह कटु नहीं होती, बल्कि सुनने मे बड़ी भली लगती हैं। आजकल इस प्रकार के लोगों की बड़ी भरमार हो गई है। कुछ तो इतने प्रसिद्ध हो गये हैं कि रोज टी वी पर आकर उस सुन्दर दुनिया की सैर कराते हैं जहाँ केवल प्रेम ही प्रेम है। इस प्रकार वे हिंदूसमाज के एक बहुत बड़े हिस्से को उन कटु सत्यों से दूर रखते हैं जो उनकी हर पीढ़ी को थोड़ा और अहिंदू बनाती जा रही हैं। ये सभी समाज में अपना-अपना गौरव तो बढ़ाते जाते हैं और साथ ही साथ हिंदू समाज के एक बहुत बड़े अंग को "और भी अधिक क्षत्रिय-विहीन" एवं अपने ही जैसा मानसिक तौर पर नपुंसक बनाते जाते हैं।

जब-जब अधर्म की वृद्धि होती है...

बहुत दिनों पहले (शायद पायोनियर में) पढ़ा था कि हुसैन ने सीतामैया को हनुमानजी की पूँछ के साथ हस्तमैथुन करते हुए चित्रित किया है। इसे पढ़कर मेरा खून खौल उठा था कि ऐसे जानवर को तो उठाकर समुद्र में फेंक देना चाहिए। तबसे मैं इस बात की स्वयं पुष्टि करना चाहता था कि क्या यह वस्तुतः सत्य है क्योंकि ऐसी असाधारण बात मैंने पहले कभी सुनी नहीं थी और हुसैन को मैं बड़े कलाकार के रूप में जानता था। यह कई वर्षों पहले की बात है और जब-जब मैंने किसी से इसका जिक्र किया तो लगा किसी को भी इसका ज्ञान ही नहीं! ऐसी स्थिति में मेरे लिए इस बारे में कुछ लिखना संभव न था। जैसा कि प्रफुल्ल गोराडिया ने लिखा कि यदि रूसी मोदी ने वह पुस्तक न छपवायी होती तो शायद किसी को यह खबर भी नहीं होती कि हुसैन ने इस प्रकर के कौन-कौन से तैलचित्र बनाये और किसे-किसे बेचा। उसी प्रकार से मैं भी आपको इन बातों से आगाह नहीं कर पाता यदि हिंदू जनजाग्रुति समिति ने उन चित्रों को अपने वेबसाइट पर प्रस्तुत न किया होता। चित्रों को देखने में और उनके बारे में केवल सुनने में बहुत बड़ा फर्क होता है। सुनकर स्थिति की गंभीरता को आँका नहीं जा सकता। देखने के पश्चात उसकी छाप मन पर गहरी होती है। देखकर जब आप दूसरों को दिखाते हैं तब उनको आप पर विश्वास होता है। सुनकर जब आप उनको सुनाते हैं तो बात आयी-गई हो जाती है। अपनी आँखों से देखने के बाद आपको इस बात की प्रतीति होती है कि आपकी आस्थाओं एवं आपकी भावनाओं के साथ क्या-क्या खिलवाड़ किये जा रहे हैं। देखने के बाद आप यदि कुछ करने को उद्यत नहीं होते तो आपको धिक्कार[1] है। हाँ, पर जो भी करें अपनी हदों में रहकर। वह समय भी आयेगा जब आप उन हदों को पार कर सकेंगे। समय का मान करना सीखिये।

[1] धिक्कार की बातपर ख्याल आया। देहरादून में खड़बड़ा नाम की कोई जगह है। वहाँ से एक व्यक्ति ने लिखा कि हुसैन के इन चित्रों को देखकर उसका हृदय ग्लानि से भर गया और उसे लगा कि मैं हुसैन के कार्य में उसकी सहयता कर रहा हूँ इन्हें आपतक पहुँचा कर। उनकी सोच में ऐसी चीजों को ढका-छुपा कर रखना ही अच्छा होता है। बाकी सभी पाठकों की प्रतिकृयायें इसके विपरीत थीं।

अधर्म जितना बढ़ेगा और उस अधर्म के प्रति आपकी उदासीनता जितनी बढ़ेगी ...

आप लोगों में बहुत बड़े-बड़े आदमी हैं, जिनकी सोच बहुत बड़ी और ऊँची है। आपकी आत्मा बड़ी महान है और आप सभी को प्रेम और करुणा की दृष्टि से देखते हैं। मैं आप में से एक नहीं हूँ। मुझ ामें एक साधारण आदमी का खून दौड़ता है और मेरी सोच भी बहुत साधारण और सीमित है, उसमें महानता और बड़प्पन जैसा कुछ नहीं। • आज तो आपकी माता-समान देवियों को इस कदर गंदी नजर से देखा और दिखाया रहा है। कल यही आपके पड़ोस की स्त्रियों के साथ होगा। और परसों आपके घर की दहलीज को लांघ कर उनकी पहुँच आपकी अपनी माँ-बहनों तक होगा। तब यदि अपनी माँ-बहनों की इज्जत अपनी-ही आँखों के सामने लुटते हुए देखकर भी आप उनकी रक्षा हेतु खड़े नहीं होते तो मैं आपको महात्मा नहीं, बल्कि अव्वल-दर्जे का हिंजड़ा मानूंगा। • आप अपने-आपको "सन्यासी" मानते हैं और स्वयं को समाज और संसार के बाहर खड़ा हुआ पाते हैं। आप लोगों को अच्छी-अच्छी महानता की शिक्षा देते है, उन्हें प्रेम और ईश्वरीय ज्ञान का पाठ पढ़ाते हैं। कल आपकी जन्मदायिनी माँ का बलात्कार आपकी आँखों के सामने होता है और आप आँखे मूँदकर ईश्वर के ध्यान में जुट जाते हैं। आपकी तो कोई माँ रही ही नहीं। जब संसार त्यागा तो आपने अपने सभी संबंध भी त्याग दिये। तो फिर वह औरत जिसने आपको अपनी कोख में पाला वह अब आपकी कोई नहीं। जब आपका कोई सगा-संबंधी नहीं तो फिर औरों कि माँ-बहने आपकी कौन हुईं? आपके खून में कोई उद्वेलन न हो, आपका खून न उबले तो उसे संयम की महिमा दी जाती है। पर मेरी नजरों में तो आप भगेड़ू हैं जो जिस हिंदूसमाज के दान पर जीता है और ईश्वर की आराधना का सुनहरा मौका पाता है, उसी हिंदू समाज को अपनी रक्षा करने हेतु उद्यत करने के बजाय उसे अपने आपको मोक्ष के योग्य बनाने की शिक्षा देता है। • अधर्म जितना बढ़ेगा और उस अधर्म के प्रति आपकी उदासीनता जितनी बढ़ेगी, उतना ही उस स्थिति का निर्माण होगा जो एक ब्राह्मणोंचित एवं क्षत्रियोचित व्यक्तित्व को उभरने मौका देगा, और तब आप जैसों को हिंदूसमाज बहिष्कृत करेगा। आप समय की माँग को नहीं देख पा रहे हैं और अपने लिए अपना गड्ढा स्वयं खोद रहे हैं। • सन्यासियों को मोक्ष की चाहत थी। उन्होंने अपने लिए जो रास्ता चुना, वह अपनी जगह पर ठीक था। उन्होने अपनी चाहतों को ईश्वर की ओर मोड़ा, वह भी ठीक है। गृहस्थ से उन्होंने अन्न, वस्त्र और छत स्वीकार किया, उसमें भी कोई दोष नहीं। गृहस्थ ने उसे सर-आँखों पर बिठाया, वह भी अपनी जगह पर सही था। पर इन सब के भूलभुलैय्या में दो बातें कहीं खो गईं। सन्यासी की प्राथमिकता थी ईश्वरीय सान्निध्य, पर गृहस्थ की प्राथमिकता थी अपनी संतति के हितों की रक्षा, समाज व संस्कृति की रक्षा, जिनके बिना गृहस्थ के रूप में उनका अपना अस्तित्व खो जाता। इस प्रकार दोनों के धर्म अलग-अलग थे। सन्यासी का धर्म चाहे ज्ञान रहा हो पर गृहस्थ का प्रथम धर्म "कर्म" था। सन्यासी को गृहस्थ के उस "कर्म" का व्यक्तिगत अनुभव न था। उस "कर्म" के बारे में उसका सारा ज्ञान पोथियों में ही सिमटा रहा। उसे जिस चीज का व्यक्तिगत अनुभव था उसके रंग

में रंग कर उसने गृहस्थ को "गृहस्थ के कर्म" की परिभाषा समझानी शुरु की[3]। यहीं सबकुछ गोलमाल हो गया। आज सन्यासी यदि अपने आपको हिंदूसमाज के शिक्षक की भूमिका में पाता है तो उसे अपनी सोच बदलनी होगी, समय की माँग को पहचानना होगा।

[3] इस विषय को मैं अधिक गहराई से आपके सम्मुख तब प्रस्तुत करुँगा जब अपनी एक अन्य पुस्तक का अंग्रेजी से रूपान्तर करने बैठूँगा। तब तक आपको धैर्य धारण कर उन प्रश्नों के विवाद में नहीं पड़ना है जो ऊपर दी गई छोटी-सी व्याख्या से आपके मन में उठेंगे। अभी समय नहीं आया कि आप इनमें गलतियाँ खोजना शुरु करें, जैसी कि आदत होती कुछ बुद्धिजीवियों में जो यह भूल जाते हैं कि इतनी पतली सी पुस्तक में सारी बातें एक साथ समायी नहीं जा सकती हैं। यह विषय इस पुस्तक का मूल विषय नहीं है।

अब कुछ देर बैठ कर सोचें

यदि आज का छोटासा आधुनिक समाज, आपके इतने बड़े हिंदूसमाज के माता-स्वरूप दुर्गा को इस प्रकार से चित्रित करने का दुःसाहस कर सकता है, तो कल जब इस समाज की यही मनोवृत्ति और भी सुदृढ़ होगी तब वह आपकी अपनी माता, आपकी अपनी बहन, आपकी अपनी पत्नी एवं आपकी अपनी पुत्री को किस रूप में चित्रित करेगा? आज आपकी शक्ति जब कुछ बाकी है तब यदि आप इसका निवारण नहीं कर पाते, तो आने वाले समय के साथ जब आपकी शक्ति क्षीण होती जायेगी एवं आपका रहा-सहा मनोबल टूटता जायेगा, तब आप क्या कर पायेंगे? बेशक आज आप इस समस्या को टालते जायें, पर क्या समय आपके लिए ठहरेगा?

अपने-आपसे कुछ प्रश्न पूछें

(1) मकबूल फ़िदा हुसैन की धार्मिक एवं सांस्कृतिक पृष्ठभूमि क्या है;

(2) उनसब की धार्मिक एवं सांस्कृतिक पृष्ठभूमि क्या है जो इस राष्ट्र के सबसे बड़े, एवं सबसे महत्वपूर्ण, मस्जिद के संरक्षण में कुछ इसीप्रकार के चित्रों को बेचते हैं;

(3) उनसब की धार्मिक एवं सांस्कृतिक पृष्ठभूमि क्या है जो इन मस्जिदों में प्रवेश करते हैं एवं वहाँ से इसप्रकार के चित्रों को खरीदते हैं;

(4) उनसब की सोच क्या है और वे इसप्रकार के चित्रों में इतनी रुचि क्यों लेते हैं, और इस प्रक्रिया को उनके अपने धार्मिक संरक्षण में इतना बढ़ावा क्यों दिया जाता है;

(5) उनकी यह सोच कैसे बनी, यह सोच किस हद तक आगे जा सकती है, और जब यह सोच उन हदों को छूने लगेगी, तब उनके अगले कदम आप पर क्या कयामत ढायेंगे?